भर्तृहरि कृत नीतिशतक से–

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे ।
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासङ्कटे ।।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने, तस्मै नमः कर्मणे ।।

जिस कर्म के वशीभूत ब्रह्मा इस ब्रह्माण्ड में
सदा कुम्हार का काम कर रहे हैं,
विष्णु, अनेक संकटों से भरे इस संसार में
दशावतार लेने के लिए विवश हैं,
रूद्र हाथ में कपाल लेकर भिक्षाटन करते हैं और
सूर्य आकाश में चक्कर लगाते रहते हैं, उस कर्म को नमस्कार है।

By means of destiny
Brahma is constrained to work like
an artificer in the cosmic egg;
Vishnu is compelled to incarnate himself in ten forms;
Siva is forced to live as a mendicant,
holding the skull in his hands as a begging bowl;
the sun is compelled to traverse his daily course in the skies.
Adoration, therefore, be to Karma.

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्यविघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैर्मुहुर्मुहुरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति।।

विघ्न होने के भय से,
अधम मनुष्य काम को आरम्भ ही नहीं करते हैं।
मध्यम मनुष्य कार्य को आरम्भ तो करते हैं,
किन्तु विघ्न आते ही उसे बीच में ही छोड़ देते हैं।
परन्तु, उत्तम मनुष्य जिस काम को आरम्भ करते हैं,
उसे बार–बार विघ्न आने पर भी, पूरा करके ही छोड़ते हैं।

The lowly people do not begin
any work apprehending obstacles.
The middle ones begin, but stop when faced with obstacles.
But, the best people are consistent in their
efforts despite repeated challenges.

वहति भुवनश्रेणिं शेषः फणाफलकस्थितां
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स विधार्यते ।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरा–
दहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः।।

शेषनाग ने चौदह भुवनों की श्रेणी को
अपने फन पर धारण कर रखा है,
उस शेषनाग को कच्छपराज ने अपनी पीठ
के मध्य भाग पर धारण कर रखा है,
किन्तु समुद्र ने कच्छपराज को भी हलकी सी चीज
समझ कर अपनी गोद में रखा है।
इससे प्रत्यक्ष है कि बड़ों के चरित्र की विभूति असीम है।

Shesha (the chief serpent) bears the multitude
of worlds (that rest) on (its) hood.
That (Shesha) is always borne by the chief tortoise
on the middle of (its) back.
The ocean shelters it (the chief tortoise)
in (its) laps with ease.
Evidently, the character of the great
people is abundantly glorious.

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे ।।

दशों दिशाओं और तीनो कालों से परिपूर्ण,
अनंत और चैतन्य–स्वरुप
अपने ही अनुभव से प्रत्यक्ष होने योग्य,
शान्त और तेजरूप परब्रह्म को नमस्कार है ।

My obeisance to the ever luminious Brahman,
whose form is only pure unlimited intellect
and unconditioned by space, time,
and the principal means of knowing
which is; self-realization.

भर्तृहरि एक महान् संस्कृत कवि थे। संस्कृत साहित्य के इतिहास में भर्तृहरि एक नीतिकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके आविर्भाव काल के सम्बन्ध में मतभेद है। परम्परानुसार भर्तृहरि विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के अग्रज माने जाते हैं। इनके शतकत्रय (नीतिशतक, शृंगारशतक, वैराग्यशतक) भारतीय जनमानस को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। नीतिशतक में भर्तृहरि ने अपने अनुभवों के आधार पर तथा लोक व्यवहार पर आश्रित नीति सम्बन्धी श्लोकों की रचना की है। एक ओर तो उन्होंने अज्ञता, लोभ, धन, दुर्जनता, अहंकार आदि की निन्दा की है तो दूसरी ओर विद्या, सज्जनता, उदारता, स्वाभिमान, सहनशीलता, सत्य आदि गुणों की प्रशंसा भी की है। नीतिशतक के श्लोक संस्कृत विद्वानों में ही नहीं अपितु सभी भारतीय भाषाओं में समय–समय पर सूक्ति रूप में उद्धृत किये जाते रहे हैं।